संस्कार सुरभि

बाल संस्कार केन्द्र

विद्यार्थी दिनचर्या विशेष दोहे ....

१. जो भी बालक नित्य करे, अपने इष्ट पर त्राटक |
उसके आंतरज्योति के, शीघ्र ही खुलते फाटक ||

२. जो कोई भी छात्र चले, गुरुआज्ञा माहीं |
उसका भावी उज्जल है , इसमें संशय नहीं ||

३. अपने श्रीगुरुदेव का, रोज करें हम ध्यान |
दुर्गुण सारे छूटेंगे, बनेंगे शीघ्र महान ||

४. ॐ कार सम है नहीं, जग में कोई मंत्र |
इसके लाभ अनंत हैं, माप सकें न यंत्र ||

५. निष्ठा अरु अति प्रेम से, रोज करें हम सेवा |
शुद्ध बने अपना हृदय , हों प्रसन्न गुरुदेवा ||

बूझो तो जानें

एक सेठ ने अपने उन्नीस ऊँटों का आधा हिस्सा अपने पुत्र के चौथाई पुत्री के व पाँचवाँ हिस्सा अपनी धर्मपत्नी के नाम वसीयत में लिखा | बताइये इन्हे कैसे बाँटेंगे |

दिनचर्या में उपयोगी मंत्र

❖ **करदर्शन मंत्र** :

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती |
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ||

❖**भूमि- वंदन मंत्र :**

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते |
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व में ||

बाल संस्कार केन्द्र शिक्षकों के लिए

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

शिक्षक यह पक्का करें कि हमें ईस्वर-प्रीत्यर्थ कर्म करना है |
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु |
सुनत कहत रहत गति पावहु ||

'प्रभु का नाम स्वयं हपो और दुसरों को जपने के लिए प्रेरित करो | नाम सुनते, कहते और पवित्र आचरण से रहते हुए उच्च अवस्था बन जायेगि |' (सुखमनी साहिब)
आपनी उन्नति लौकिक हो , चाहे आध्यत्मिक हो, बिना निष्काम सेवा के सम्भव ही नही हें |
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु |नानक गावीऐ गुणी निधानु ||
सब तें सेवक धरमु कठोरा | सच्ची सेवा तो वाही कर सकता है जिसका उद्देश्य ईश्वरप्राप्ति है , बाकि तो सेवा के नाम पर गड़बड़-ही-गड़बड़ करते हैं | तो अपने जीवन में ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बना लें क्योंकि ईश्वर के सिवाय सब नाश हो रहा है, बीत रहा है, एक पल भी नहीं रुकता है | बचपन बीत गया, किशोरे अवस्था भी बीत गयी, सब बीत रहा है | नश्वर को पाने का उद्देश्य बनाएगा तो कितना भी बुद्धिमान हो जायेगा परन्तु दुखों से जान नहीं छुटेगी |
दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता
आप लोग जो अभियान में जाने वाले हैं, आपका यह अभियान २५ लाख विद्यार्थियों तक पहुँच सकता है | आपका अभियान बिलकुल सफल होकर रहेगा , उसको कोई नहीं रोक सकता |

- पूज्य बापूजी

छोटी-सी युक्ति

('दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' के अभियान में)

१. विद्यालय के आचार्य से जब प्रतियोगिता की अनुमति के लिए मिलने जायें तो मिठाई-प्रसाद तुलसी के पत्ते व थोड़े फूल रख कर ले जायें और ऐसी भावना करें की इनके अन्दर बैठे हुए परमात्मदेव को हम भोग लगा रहे हैं |'

२. जिन जिन विद्यालयों में प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है, उस क्षेत्र के समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रतियोगिता का प्रचार अवश्य करें | इस प्रकार की प्रेस - विज्ञप्ति समाचार - पत्रों में दें और वही समाचार - पत्र विद्यालयों में प्राचार्य से मिलते समय दिखायें | 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश प्रतियोगिता' की परीक्षा देते विद्यार्थियों के फोटो एवं जानकारी भी परीक्षा-आयोजन के दिन समाचार-पत्रों में दें | विज्ञापन आदि में अधिक खर्च न हो इस बात का ध्यान रखें |

विशेष तिथियाँ :

३ नवेम्बर : गोपाष्टमी (इस दिन केंद्र के बच्चों को महत्ता के बारे में बतायें |)

४ नवेम्बर : भगवत्पाद श्री श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण दिवस (केंद्र में दादागुरु के प्रसंग बतायें - 'जीवन सौरव ' पुस्तक से)

६ नवेम्बर: देवउठी एकादशी

(इस दिन कपूर से आरती करने पर अकाल मृत्य नहीं होती |)

१० नवेम्बर: देव दीवाली, गुरुनानक जयंती

जप करने की विशेष तिथियाँ

१५ नवेम्बर: मंगलवारी चतुर्थी (सूर्यादय से सुबह ६.५२ तक)

१७ नवेम्बर : गुरुपुष्यामृत योग

बन गये आज हम बड़भागी ...

गुरुदेव आपके चरणों में,
हम पूरी तरह समर्पित हैं |
बन गये आज हम बड़भागी,
अब हर प्रकार से अर्पित हैं ||
इस धरती का सौभाग्य जगा,
तब पड़े आपके पावन पग |
हर ओर उजाला फ़ैल गया,
कण-कण करता जगमग-जगमग ||
दर्शन के प्यासे नैन आज,
गुरु के दर्शन से तृप्त हुए |
अंतस्तल के कलुषित विचार,
क्षण भर में सारे लुप्त हुए ||
जब इस जीवन का पुण्य जगा,
तब ही तो आया यह अवसर |
जब तक था उर में अन्धकार,
उसने भटकाया था दर-दर ||
गोविन्द से ऊचाँ गुरुपद है,
गाया है वेद - पुराणों ने |
गुरुकृपा से पाई मुक्ति है,
परमात्मप्राप्ति के पथिकों ने ||
गुरु चरणामृत ही पाप रूप,
कीचड का सम्यक शोषक है |
वह ज्ञान तेज का दाता है,
जीवन का वह उद्दीपक है ||
चरणों में भक्ति अटूट रहे,
श्रद्धा मेरी दृढ हो भगवन |
है नहीं और कोई इच्छा,
हो गाया आपका यह तन मन ||

- जय जवान

अंक १७१ के प्रश्नों व् पहेलियों के उत्तर

किसके गुरु कौन: १.ङ, २: ज , ३: छ , ४: क , ५: झ , ६: घ , ७: ग , ८: च , ९: ञ, १०: ख

बुद्धि परिक्षण :

१: माँ सरस्वती , २: विभीषण , ३: माँ लक्ष्मी